शीर्षक: 'जुड़ै मियाँ के माँड़ नैय, माँगय मियाँ ताड़ी'

(लेखन: अनिशा शेखर सिंह, प्रधान संपादक, बिहार नमन पब्लिशिंग हाउस)

भूमिका

प्रसिद्ध लोकोक्ति बिहार के मैथिल क्षेत्र की मौलिक यथास्थिति का सजीव चित्रण करती है। या इसे ऐसा कहा जाए कि वर्तमान समय में जितने भी **'नर - नारी के साक्षात स्वरूप'** विद्यमान है, उनमें कहीं ना कहीं **'जुड़ै मियाँ के माँड़ नैय, माँगय मियाँ ताड़ी'** लोकोक्ति का भाव प्रतिबिंबित होता है। हम सब ने पढ़ा है कि **आत्मा अमर है और इच्छाएं अनंत**। यदि हमारी कोई एक इच्छा पूरी होती है तो तुरंत जीवित शरीर की आत्मा में दूसरी इच्छा जवान होने लगती है। इसे सरल स्थिति में इस प्रकार समझिए कि कोई व्यक्ति जिसे साइकिल भी बमुश्किल मिला हो, वह कुछ समय के बाद मोटरसाइकिल को प्राप्त करने की इच्छा से लवरेज हो जाता है और जिसके पास मोटरसाइकिल होता है, वह मोटरगाड़ी (कार) की सवारी करने का स्वप्न अपनी आंखों से देखने लगता हैं। हमारी यही इच्छा, आत्मा को गुदगुदी करने लगती है और यही से जन्म होता है इस प्रसिद्ध लोकोक्ति **'जुड़ै मियाँ के माँड़ नैय, माँगय मियाँ ताड़ी'** का।

अब हम इस लोकोक्ति का मूल अर्थ समझते हैं। **जुड़ै** का अर्थ है- **प्राप्त** या **उपलब्ध** होना, **मियाँ** का अर्थ है- **व्यक्ति**, **माँड़** का अर्थ है- भात से **पासाया हुआ पानी**, **नैय** का अर्थ है- **नहीं**, **माँगय** का अर्थ है- **मांगना** और **ताड़ी** का अर्थ है - **ताड़** अथवा देसी खजूर को छेबने के बाद उससे प्राप्त श्वेत श्यानता युक्त पदार्थ जिसे औषधि के रूप में कम किंतु मदिरा के रूप में ज्यादा प्रयोग लिया जाता है। अर्थात एक व्यक्ति जो चावल तो दूर उसका पका हुआ पानी (जिसमें अमीनो अम्ल, विटामिन बी और ई, खनिज पदार्थ, एंटीऑक्सीडेंट और कई मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी पोषक तत्व पाए जाते हैं) प्राप्त करने में असमर्थ होता है। लेकिन वह दूसरे से ताड़ी (जिसमें 20% से 43% तक अल्कोहल की मात्रा पाई जाती है। यद्यपि कुछ स्थिति में यह स्वास्थ्य के लिए लाभकारी भी होता है) जैसे **'रस'** की मांग करता रहता है। इसका सीधा सा अर्थ है कि व्यक्ति स्वयं के लिए लाभकारी दशा का निर्माण करने का प्रयास भी नहीं करता लेकिन दूसरे से अनजाने में अपनी औकात से बाहर 'रस' की मांग कर बैठता है। ऐसी स्थिति तब उत्पन्न होती है जब **'इच्छा और आत्मा'** के बीच गहरा द्वंद हो।

किसी कवि ने 'इच्छा और आत्मा' के बीच हो रहे इसी द्वन्द को बहुत ही सधे हुए भाव से कागज पर उकेरा हैं-

"कुछ पा लिया, अब और पाने की इच्छा है,
मौन रह लिया बहुत, अब शोर करने की इच्छा है,
कुछ सफर तो तय कर लिया, अब और करने की इच्छा है,
इच्छाओं से भी पार, अब जाने की इच्छा है"।

कवि का यह भाव 'जुड़ै मियाँ के माँड़ नैय, माँगय मियाँ ताड़ी' लोकोक्ति से बहुत गहराई से जुड़ा हैं। वर्तमान समय में हम हो या आप, इसी इच्छा की पूर्ति करने वाले घटकों के पीछे बस **दौड़ रहे हैं, ठहर नहीं रहे**।

राष्ट्रीय राजनीति हो या राज्य की राजनीति, 'जुड़ै मियाँ के माँड़ नैय, माँगय मियाँ ताड़ी' के मूल भाव को बहुत स्पष्ट करता है। कुछ ऐसी भी राजनीतिक पार्टियां हैं जिनके **3-4** लोग विधानसभा सदस्य या लोकसभा सदस्य चुनावों में चयनित होते हैं। यदि कोई बड़ी रजनीतिक पार्टी जिसे सदन में बहुमत साबित करना है लेकिन उसके लिए 3 सदस्य कम पर रहे होते हैं। जब बड़ी राजनीतिक पार्टी लोकतंत्र की स्थापना के लिए उस छोटी राजनीतिक पार्टी से 3 सदस्यों का समर्थन मांगता है तो उस छोटी राजनीतिक पार्टी का मुखिया बड़ी राजनीतिक पार्टी को समर्थन देने के एवज में **उप-मुख्यमंत्री** अथवा **उप-प्रधानमंत्री** अथवा किसी बड़े मंत्रालय या विभाग की जिम्मेदारी मांग लेता है। जरा सोचिए जिस राजनीतिक पार्टी के केवल 3-4 सदस्य ही बमुश्किल सदन में जीत पाते हो, वे मांगने पर आ जाए तो

देश अथवा राज्य के नेतृत्व की मांग कर बैठते हैं। अगर उनकी मांग पूरी हो जाती है तो यह उसके लिए अल्कोहल जैसा काम करता है और शुरू होता है **अनर्गल नीति निर्माण** और मीडिया में **अनाप-शनाप बातों का साक्षात्कार**, जो लोगों के लिए मनोरंजन से ज्यादा कुछ नहीं होता। यह बिल्कुल 'जुड़ै मियाँ के माँड़ नैय, माँगय मियाँ ताड़ी' वाली स्थिति होता है।

हमारा भारतीय समाज और विशेषकर बिहारी समाज में भी ऐसे अनेकों स्थितियां है जो इस लोकोक्ति से साम्य रखती है। मेरी समझ में **'दहेज प्रथा'** इसका राष्ट्रव्यापी उदाहरण है। जानते हैं, वर पक्ष जिसका खुद का हैसियत मोटरसाइकिल खरीदने की नहीं होती, वह वधू पक्ष से मोटरगाड़ी (कार) की डिमांड करता है। भले ही कर्ज लेकर उसमें पेट्रोल / डीजल फूंका जाए या दरवाजे पर ही क्यों ना खड़ी रहे लेकिन चार चक्का तो चाहिए ही क्योंकि यह उसके सामाजिक स्टेटस की बात है..भई और फिर समाज और **रिश्तेदारों में भौकाल** भी तो बनाना है। वर पक्ष यह क्यों नहीं समझता कि **'वधू'** साक्षात **सरस्वती और लक्ष्मी** का अंश है। **अपने संस्कारों से वधू सरस्वती बनकर वर के घर को दूसरों के लिए अनुकरणीय बनती है और त्याग, समर्पण, स्नेह, भाव और मित्र रूपी धन लूटकर लक्ष्मी का फर्ज निभाती है।** 'जुड़ै मियां के माँड़ नैय, माँगय मियाँ ताड़ी' और **दहेज लोभी** जैसे छुपे हुए महानुभावों को वधू (नारी) के इस रूप के बारे में जरूर से समझना चाहिए-

''खुशियों का संसार तुम्हीं से, जीने का आधार तुम्हीं से
बंद होते हैं और खुलते भी हैं, दुनिया के दरबार तुम्हीं से
प्रेम की शुरुआत तुम्हीं से, जीवन का आगाज तुम्हीं से
ये जहां है जगमग सूरज से, सूरज की चमकार तुम्हीं से
आन - बान और शान तुम्हीं से, संस्कारों की खान तुम्हीं से
दर्द, त्याग और ममता की है, संसार में पहचान तुम्हीं से।''

अब जब सरस्वती और लक्ष्मी को अपने यहां बुलाना है तो अपना **'माँड़'** खुद तैयार करना होगा। मतलब मेहनत करनी होगी, अपना मुकाम हासिल करना होगा और सबसे जरूरी बात अपनी मानसिकता बदलनी होगी। तभी अपना **"माँड जुड़ा"** सकते हैं। एक बात और याद रहे की **सरस्वती और लक्ष्मी जुड़ाना पड़ता है, माँगा नहीं जाता।**

हमारा पड़ोसी देश पाकिस्तान गंभीर मुद्रास्फीति, बिजली की बेतहाशा बढ़ती कीमतों, गंभीर जलवायु संकट और विकास के लिए अपर्याप्त सार्वजनिक संसाधनों सहित अनेकों आर्थिक कठिनाइयों से जूझ रहा है। वहां **39.2 प्रतिशत** गरीबी है और राजनीतिक अस्थिरता भी है। फिर भी उसके **कुछ गुप्त संगठन** भारत से **कश्मीर की मांग** करता है, हिंसा फैलाता है, भारतीय सेना पर पीछे से हमला करता है, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत को नीचा दिखाने का कोई प्रयास नहीं छोड़ता। उसे यह सब करने से पहले अपने गिरेबान में झांकना चाहिए कि **उसकी औकात क्या है?** वहां स्थिति ऐसी है कि रोटी के लिए लोग आपस में लड़ रहे हैं,

एक-दूसरे की हत्या कर रहे हैं। ***ऐ पाकिस्तान***, पहले अपने लोगों के लिए रोटी और माँड़ तो जुड़ा लो, फिर हमसे कुछ मांग करना।

पूरे बिहार में एक संबंधी का बड़ा ही रुतबा और भौकाल होता है। वे हैं **'फूफा जी'**। ये सामने वाले की आर्थिक स्थिति का ध्यान नहीं रखते, बस डिमांड कर देते हैं। फूफा जी वही है जो बात-बात पर मुंह फुला लेते हैं। उनके अपने घर में खान-पान चाहे जैसा भी हो लेकिन जब इनका ससुराल में आगमन होता है तो इनको **शाही पनीर, नवरत्न पुलाव, गुलाब जामुन, रसमलाई** और **भिन्न प्रकार के व्यंजन** चाहिए होता है। साथ में गरमा गरम पकौड़े भी मांगते हैं जिसे ये **'फू और फा'** (जब व्यंजन गर्म हो तो ऐसी आवाज स्वतः निकल जाती है) करके खाते हैं और कहे जाते हैं 'फूफा जी'। **ये न तो सामने वाले की स्थिति का ध्यान नहीं रखते और न ही उस पके हुए व्यंजन में सने हुए प्रेम का**। बस डिमांड कर देते हैं। हमारे समाज में केवल फूफा अकेले ऐसे सम्बन्धी नहीं है, वरन उनके चरित्र जैसा अनेकों रिश्तेदार हमारे आसपास मंडराते रहते हैं जो ना तो खुद चावल उगा सकते हैं, ना दिए गए चावल से भात पकाकर माँड़ निकाल सकते हैं, न ही इसे जुड़ा सकते हैं। लेकिन जब सामने वाले से मांगने की बात आती है तो अपनी आवश्यकता और हैसियत से

ज्यादा मांग कर देते हैं। **वैसे देखा जाए तो हम सबमे छुपे हुए 'फूफा जी' होते हैं जो जगह, समय और स्थिति के अनुसार अपनी 'ऑखें चढ़ाते हैं' और 'मुँह से बकार' निकालते हैं।** इस प्रकार हम सब 'जुड़ै मियां के माँड़ नैय, माँगय मियाँ ताड़ी' लोकोक्ति भाव से जुड़े हैं।

भारत जैसे विशाल देश में जब भी **मतदान का मौसम** आता है तो कई सालों से सोए **'फतंगे'** (व्यक्ति के लिए प्रयोग किया गया शब्द) जग उठते हैं और भिनभिनाना शुरू करते हैं। इन 'फतंगो' का अर्थव्यवस्था के विकास सिद्धांत के अनुसार **'राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास'** में लगभग शून्य योगदान होता हैं क्योंकि इनसे सरकार को कोई राजस्व प्राप्त नहीं होता। लेकिन चुनाव के समय अलग-अलग राजनीतिक पार्टियों के पक्ष में मत देने के लिए **'मांस, सुरा और सुंदरी'** की मांग करते हैं जिसे यह स्वयं मेहनत करके नहीं **'जुड़ा'** सकते। वर्तमान की राजनीति में ऐसे **'टूटपुजिया फतंगों'** की बहुतायत संख्या है जो केवल चुनाव के समय ही सक्रिय होते हैं और मतदान के **संवैधानिक अधिकार** को **'वोट के बदले नोट - नोट के बदले वोट'** रूपी महामारी से संक्रमित करते हैं। बाकी समय ये **खाली गलबाजी** करते हैं।

उपसंहार

'जुड़ै मियाँ के माँड़ नैय, माँगय मियाँ ताड़ी' लोकोक्ति हमें सिखाता है कि स्थिति चाहे जैसी भी हो व्यक्ति को सदैव किसी न किसी काम में व्यस्त रहना चाहिए क्योंकि यह **जीवन में सक्रियता और उत्पादकता** की ओर प्रेरित करता है। इससे व्यक्ति में अनुभव आता है और वह उत्साह एवं आत्मविश्वास से लवरेज होकर कुछ भी 'जुड़ाने' को सदैव प्रेरित होता है।

☆☆☆

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर लगभग 700 से 800 शब्दों में एक निबंध लिखिए :

1. **'जुड़ै मियाँ के माँड़ नैय, माँगय मियाँ ताड़ी'** (अंक: 100)